

समझदार जीवनसाथी और जिम्मेदार पिता कार्यक्रम अन्तर्गत
वार्षिक रिट्रीट रिपोर्ट
16-17 दिसम्बर 2017
सप्तर्षि सेवा भवन, तुपूदाना, रांची

पहला दिन (16 दिसम्बर 2017)

पृष्ठभूमि –

समझदार जीवनसाथी और जिम्मेदार पिता कार्यक्रम अन्तर्गत चयनित 30 गांवों के एनीमेटर्स व समूह सदस्यों के साथ दो दिवसीय वार्षिक अधिवेशन का आयोजन किया गया। इस अधिवेशन का मुख्य उद्देश्य जेण्डर समानता के लिए तीन जिलों में किये जा रहे सघन प्रयासों से बनी सीख को साझा करना तथा नये मुद्दों पर समझ बढ़ाना था। इस कार्यक्रम में तीनो पार्टनर संस्थाओं, एनीमेटर तथा समूह सदस्यों, फेम नेटवर्क के सदस्यों के साथ-साथ राज्य स्तर पर कार्यरत विभिन्न स्वैच्छिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों, मेन्टर, महिला संगठनों, सी0एच0एस0जे0 नई दिल्ली के प्रतिनिधियों सहित कुल 114 लोगों ने भाग लिया।



सत्र – 1 उद्घाटन

कार्यक्रम के प्रथम सत्र में फेम सदस्य राहुत मेहता द्वारा आये हुए अतिथियों व समूह सदस्यों का स्वागत करते हुए लुकमान अंसारी जी के गीत 'झारखण्ड के माटी के रंगा जोहार.....' के बाद कार्यक्रम की शुरुआत की गई। फेम के राज्य समन्वयक द्वारा इस पहले अधिवेशन में पुनः सभी का स्वागत करते हुए फेम द्वारा वर्ष 2002 से राज्य के 13 जिलों में जेण्डर समानता व बाल अधिकारों के लिए पुरुषों के साथ किये जा रहे विभिन्न प्रयासों को रखा तथा सभी साथियों खासकर पुरुषों को मिलकर काम करने तथा अपनी भूमिकाओं व जिम्मेदारियों को करने का आहवान किया। जिसके बाद सृजन फाउण्डेशन से राजीव जी द्वारा समझदार जीवनसाथी और जिम्मेदार पिता कार्यक्रम के तहत तीन जिलो रांची, गुमला व बोकरो में पुरुषों और लड़कों के साथ सघन रूप से किये जा रहे विभिन्न प्रयासों तथा कार्यक्रम की थ्योरी को सभी के सामने रखते हुए निकलकर आ रहे परिणामों व चुनौतियों को सभी के साथ साझा किया। उन्होंने बताया कि अब पुरुष घर के कामों में भागीदारी व निर्णय लेने में महिलाओं को प्रोत्साहित करना, महिलाओं के आवागमन हेतु मदद करना, बच्चों की देखभाल में भाग लेना, परिवार नियोजन आदि में अपनी जिम्मेदारी को निभाने के लिए आगे आ रहे हैं तथा सेवा प्रदाताओं के स्तर पर भी बदलाव हेतु प्रेरित किया जा रहा है क्योंकि वे भी हमारे समाज के हिस्से हैं और उनके अंदर भी वही पितृसत्तात्मक सोच काम कर रही है। गांव स्तर पर विभिन्न सामाजिक मुद्दों खासकर हिंसा की

घटनाओं को लेकर सामूहिक कदम उठाने के लिए आगे आ रहे हैं। अभी तक इस तरह के प्रयास बहुत ही कम हुए हैं इसलिए ऐसे प्रयासों को अलग-अलग मंचों में बड़े स्तर पर दूसरे लोगों तक पहुंचाने का प्रयास किया जा रहा है।



प्लान इंडिया के राज्य समन्वयक अनूप होरे ने एक चित्र दिखाते हुए प्रतिभागियों के साथ समानता आधारित समाज की स्थाना के लिए लोगों को उनकी जरूरतों के आधार पर जानकारियों व सुविधाओं के बंटवारे पर विस्तार पूर्वक चर्चा किया ताकि परिणाम समान हो सके। इसी प्रकार उन्होंने उपस्थित लोगों के साथ टी0वी0 में जेण्डर भेदभाव दृष्टिकोण से दिखाये जाने वाले विभिन्न विज्ञापनों में ऐसे विज्ञापन जो अच्छा लगा हो उस पर चर्चा कराया यथा शाहरुख खान के लक्स साबुन, रिंग बजाओं, सैमसंग आदि पर लोगों के साथ चर्चा किया। इस दौरान प्रतिभागियों ने बताया कि जब हम जेण्डर समानता के लिए कुछ प्रयास करते हैं तो दूसरे लोगों द्वारा छीटाकशी की जाती है तथा व्यवधान पैदा किया जाता है। मैत्री संस्था से अपराजिता जी ने कहा कि अभी तक तमाम प्रयासों व कानूनों को बनाये जाने के बावजूद अपेक्षाकृत सामाजिक बदलाव नहीं आये हैं महिलाओं पर हिंसा कम नहीं हुई है। यदि हम महिलाओं के अधिकारों व सम्मान की बात करते हैं तो हमें अलग-अलग बक्से में देखने की बजाय समेकित रूप से असमानता को देखने की जरूरत है इसीलिए फेम के माध्यम से पुरुषों को महिलाओं की समस्याओं व अधिकारों को जानने की जरूरत है तभी हमारा समाज आगे जा पायेगा। पंचायतों में महिलाएं तो आ गई हैं लेकिन अभी भी सारा नियंत्रण पुरुषों का ही होता है तथा इसी प्रकार से पुरुषों के साथ भी इस व्यवस्था में अनेक चुनौतियां हैं जैसे वह रो नहीं सकता है, पत्नी घर सभालेगी तथा पति बाहर का काम करेगा। अगर पुरुष कोई सकारात्मक प्रयास करता है तो जोरू का गुलाम कहा जाता है इसलिए हमें पुरुषों और महिलाओं दोनों की तैयारी व सोच को बदलने की जरूरत है क्योंकि प्रकृति ने हमारे साथ कोई भेदभाव नहीं किया है।

आली से रेश्मा जी द्वारा जेण्डर समानता और महिलाओं पर होने वाली हिंसा को रोकने तथा बदलाव की प्रक्रिया को स्वयं से शुरू करने वाले इन प्रयासों की सराहना करते हुए फेम को अन्य जिलों में भी हस्तक्षेप करने का सुझाव रखा। इस दौरान उन्होंने बचपन से लड़का और लड़की के पैदा होने से पूर्व तैयारी में किस तरह भेदभाव वाला वातावरण तैयार किया जाता है तथा पैदा होने के बाद से ही लड़का और लड़की के परिवार के तौर तरीकों में भेदभाव किया जाता है, पर जानकारी को रखा। राज्य में महिलाओं पर होने वाली हिंसा के आंकड़ों को रखते हुए कहा कि हर महिला घर के बाहर अपने आप को असुरक्षित महसूस करती है क्योंकि लगभग सत्तर प्रतिशत महिलाओं ने अपने जीवन में किसी न किसी प्रकार की हिंसा को झेला है तथा घरेलू हिंसा की घटनाएं आज बच्चों व महिलाओं के साथ आज भी हमारे परिवारों में हो रही हैं। हिंसा के नाम पर मारपीट, छेड़छाड़, बलात्कार, डायन करार देना, खर्चे न देना, पढ़ाई के मौके छीन लेना, डर पैदा करना आदि अनेक तरह की हिंसा की घटनाएं होती हैं। हिंसा को समझने के लिए उन्होंने एक सच घटना का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा कि हिंसा को रोकने की जिम्मेदारी खुद पुरुषों को लेना होगा तथा यह तय करना होगा कि वे किसी भी हालत में न

तो हिंसा करेंगे और न ही हिंसा का समर्थन करेंगे, तभी महिलाओं के लिए हिंसा मुक्त परिवार व समाज की कल्पना की जा सकती है।



सत्र -2 बदलाव के प्रयासों की शेयरिंग –

अधिवेशन के द्वितीय पैनल सत्र में तीनों जिलों से आये एनीमेटर व समूह सदस्यों द्वारा व्यक्तिगत व सामूहिक तौर पर किये गये सकारात्मक प्रयासों की कहानियों को शेयर किया गया। इस पैनल में मैत्री से अपराजिता मिश्रा, आली से रेशमा सिंह व फेम से हुसैन इमाम फातमी जी ने भाग लिया तथा सत्र का संचालन सी0एच0एस0जे0 से जगदीश लाल ने किया। इस सत्र में निम्न व्यक्तियों द्वारा बदलाव की व्यक्तिगत व सामूहिक प्रयासों की कहानियों को शेयर किया गया –

1. **पकंज कुजूर, चरीमा-रांची** – घरेलू कामों में भागीदारी, बच्चों की देखभाल व गांव में लड़ककी के साथ यौन उत्पीड़न के मामले में पहल करना।
2. **लवकुश रजवार, मोचरो-बोकारो** – घरेलू कामों में भागीदारी, बाल विवाह को रोकने में अपनी बहन के सहयोग से व समूह के सदस्यों को जोड़ना, दोस्तों को छेड़खानी रोकने के लिए संवेदित करना।
3. **प्रवीण कुमार, गर्गी-बोकारो** – घर के अंदर के कामों में पत्नी के साथ भागीदारी व गांव में घरेलू हिंसा को रोकने के लिए आवाज उठाना
4. **जगरनाथ नायक, कमलापुर-बोकारो** – बेटी को स्कूल में माहवारी के दौरान मददगार भूमिका में आना व दूसरे पिताओं को इस तरह की स्थितियों में मददगार के रूप में आने के लिए प्रेरित करना, बच्चों के साथ दोस्त जैसा माहौल बनाना व अन्य दूसरे मौके उपलब्ध कराना।
5. **गजेन्द्र उरांव, गुरुग्राम-गुमला** – घर में माँ के कामों में हाथ बंटाना, दूसरे लड़कों व पुरुषों को महिलाओं और बच्चों के स्वास्थ्य देखभाल के लिए संवेदित करना, यौन हिंसा व उत्पीड़न को रोकने के लिए पुरुषों की काउन्सलिंग करना जिससे बहुत सारे पुरुष बदलाव के प्रयासों को बढ़ा रहे हैं।
6. **रवि उरांव, रांची** – परिवार नियोजन के लिए खुद की नसबंदी कराना तथा गांव के एक अन्य पुरुष को भी सफलतापूर्वक जोड़ना, घर के अंदर कामों में पत्नी का सहयोग करना व गर्भावस्था व उसके बाद पत्नी व बच्चों की देखभाल शुरू करना।
7. **बुद्धलाल लोहरा, हुटरी-रांची** – घर के कामों में हाथ बंटाना व परिवार के अंदर जेण्डर नार्म को चुनौती देना जिससे समूह के दूसरे सदस्यों ने ऐसा प्रयास शुरू किया, गांव में महिला हिंसा को रोकने के लिए सामूहिक प्रयास, बच्चों की देखभाल की जिम्मेदारी लेना।
8. **कुनाल- बोकारो** – पत्नी को नये कौशल व रोजगार के उनके अपने निर्णय में पति के रूप में सहयोग करना तथा बच्ची को तैयार करने व स्कूल सम्बंधी जिम्मेदारी लेना।

पैनल की ओर से अपराजिता जी ने कहानियां सुनने के बाद कहा कि बदलाव के बहुत अच्छे प्रयास नजर आ रहे हैं नतीजन आगे आने वाले दिनों में अच्छे बच्चें निकलकर आयेगें और शायद उन्हें प्रशिक्षण की जरूरत नहीं पड़ेगी और इन प्रयासों में चुनौतियां आना स्वाभाविक है। आप लोग दूसरों के

लिए उदाहरण बन रहे हैं ये बहुत ही अच्छी बात है और हमारी शुभकामनायें आप लोगों के साथ हैं। पैनल के दूसरे सदस्य रेशमा जी ने कहा कि ये सभी कहानियां बहुत बड़ी उपलब्धियां हैं, आप लोग समानता लाने के लिए बहुत बड़ा प्रयास कर रहे हैं इसके लिए सभी साथियों को धन्यवाद।

सत्र -3 बच्चों के साथ यौन उत्पीड़न व महिलाओं पर हिंसा के मुद्दे पर चर्चा

आली से रेशमा जी ने सभी प्रतिभागियों को बच्चों से सम्बंधित दो डाक्यूमेन्ट्री दिखाई जिसके बाद उस पर विस्तार पूर्वक चर्चा करते हुए बच्चों के साथ घर के अंदर व घर के बाहर होने वाले यौन उत्पीड़न को समझने तथा उन्हें रोकने के लिए जिम्मेदार पिता या भाई के रूप में क्या कदम उठा सकते हैं समझ बनाने का प्रयास किया। इसके बाद उन्होंने महिलाओं के साथ होने वाली हिंसा तथा रेप से सम्बंधित दो डाक्यूमेन्ट्री फिल्म दिखाई तथा उपस्थित लोगों की प्रतिक्रियाओं को लेते हुए चर्चा कराया। उन्होंने महिलाओं के साथ होने वाली विभिन्न तरह की हिंसा की घटनाओं को रोकने के लिए व्यक्तिगत तथा सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता पर जोर देते हुए पुरुषों की भूमिका पर समझ बनाने का प्रयास किया।



वैकल्पिक मर्दानगी पर रोल प्ले के लिए समूहों का बंटवारा –

सत्र का फ़ैसलिटेशन करते हुए राहुल मेहता ने कहा कि अलग-अलग जिलो से आये हुए सभी सदस्यों को शेयर की गई कहानियों के अनुसार वैकल्पिक मर्दानगी के उदाहरणों को लेकर अगले दिन रोल प्ले का प्रस्तुतीकरण करना है। इसके लिए हर जिले के एनीमेटर व समूह सदस्यों को जोड़कर रोल प्ले समूह बनाये गये। इसी प्रकार से एक समूह फेम सदस्यों का बनाया गया तथा उन्हें भी अपना रोल प्ले प्रस्तुतीकरण करने का आग्रह किया गया। इसके बाद आशा संस्था से अजय जी ने रोल प्ले के लिए जरूरी मार्गदर्शक देते हुए कहा कि स्टोरी के आधार पर चरणबद्ध तरीके से पूरी कहानी के आधार पर दिखायें। रोल प्ले को डायलाग, आवाज या माइन्ड किसी भी तरीके से कर सकते हैं तथा रोल प्ले 5 मिनट से ज्यादा समय का नहीं होना चाहिये।

दूसरा दिन (17 दिसम्बर 2017)

सत्र -1 रिकैप

वार्षिक अधिवेशन के दूसरे दिन की शुरुआत जगदीश भाई के गीत के साथ की गई। इसके बाद पहले दिन हुई चर्चाओं का रिकैप किया गया। इस कार्यक्रम के मेन्टर प्रवीर पीटर द्वारा पहले दिन हुई चर्चाओं के बारे में संक्षेप में बिन्दुओं को रखा जिसके बाद छूटी हुई बातों को अन्य फ़ैसलिटेटर तथा समूह सदस्यों द्वारा जोड़ा गया।

सत्र - 2 वैकल्पिक मर्दानगी पर रोल प्ले प्रस्तुतीकरण

वार्षिक अधिवेशन के दूसरे दिन के कार्यक्रम के दूसरे सत्र में पहले दिन बनाये गये 6 समूहों को शेयर की गई कहानियों के आधार पर बारी-बारी से वैकल्पिक मर्दानगी के तरीकों पर रोल प्ले प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित किया गया। इस सत्र का संचालन राहुल जी ने किया तथा पैनल में सृजन फाउण्डेशन से राजीव रंजन सिन्हा, सी0एच0एस0जे0 से रिमझिम जैन थी। सभी समूहों द्वारा रोल प्ले के बाद पैनल के सदस्यों द्वारा महत्वपूर्ण इनपुट देते हुए अपनी बातों को रखा गया।



सत्र – 3 विभिन्न विषयों पर सत्र संचालन

इस सत्र में प्रतिभागियों को तीन समूहों में बांटा गया तथा तीन अलग-अलग जगहों में तीन विभिन्न मुद्दों पर प्रतिभागियों की जानकारी व समझ बनाने के लिए सत्र संचालन किया गया। सत्र संचालन के विषय व फैसलितेटर निम्न प्रकार से रहे –

- समूह नं0-1 मातृत्व देखभाल में पुरुषों की भूमिका फैसलितेटर- प्रत्युश, एकजुट
- समूह नं0-2 बच्चों की देखभाल में पुरुषों की भूमिका फैसलितेटर- गौतम हल्धर, सृजन फाउण्डेशन
- समूह नं0-3 परिवार नियोजन में पुरुषों की भूमिका फैसलितेटर- प्रवीर पीटर व जगदीश लाल

पहले समूह में फैसलितेटर द्वारा प्रतिभागियों को एक डाक्यूमेन्ट्री फिल्म दिखाई गई जिसके बाद उनके साथ मातृत्व देखभाल में पुरुषों की पति के रूप में भूमिका पर चर्चा की गई जिससे निकले हुए महत्वपूर्ण बिन्दुओं को रेखांकित करते हुए सुभाषी ने बताया कि- मातृत्व स्वास्थ्य में पुरुषों की भूमिका को महत्वपूर्ण माना गया तथा प्रसव पूर्व व प्रसव के बाद महिला व बच्चों की देखभाल में पिता या पति के रूप में भागीदारी होना जरूरी है। समूह के सदस्यों को अपने समूह बैठकों में इन विषयों पर दूसरे सदस्यों के साथ चर्चा करना और उनकी जानकारी को बढ़ाना बहुत ही जरूरी है तभी वे अपना योगदान दे सकते हैं। सुरक्षित प्रसव को बढ़ावा देना तथा शिशु को पहला गाढ़ा पीला दूध पिलाने सम्बंधी हमारे समाज में तरह तरह की भ्रांतियां हैं उन्हें दूर करने के प्रति लोगों को जागरूक करने की जरूरत है।

दूसरे समूह में प्रतिभागियों को चार छोटे-छोटे समूहों में बांटकर बच्चों को देखभाल में पिताओं की भूमिकाओं को चिन्हित कर प्रस्तुतीकरण करने के लिए कहा गया। समूहों की प्रस्तुतीकरण के बाद फैसलितेटर द्वारा निकले बिन्दुओं के आधार पर प्रतिभागियों को निम्न इनपुट दिया गया जो निम्न प्रकार से रहे – बच्चों के देखभाल, विकास व शिक्षा में पुरुष होने के नाते हमारी भूमिका बनती है। बच्चों को

शौचालय के प्रयोग, आस पड़ोस की साफ सफाई, आंगनबाड़ी में नियमित टीकाकरण व जांच कराना व पोषण आहार लाना तथा खिलाना, कम उम्र में किसे बच्चों की शादी न हो क्योंकि इससे उनकी न केवल पढ़ाई बाधित होती है बल्कि स्वास्थ्य भी खराब होता है, बच्चों के साथ-साथ गर्भवती महिला व धात्री माँ का स्वास्थ्य भी ठीक रहे इसके लिए उनकी नियमित जांच व टीकाकरण, पोषण आहार नियमित रूप से ले उसमें सहयोग करने में पुरुष अपनी भूमिका को निभा सकते हैं।



तीसरे समूह में प्रतिभागियों के साथ सामूहिक चर्चा की गई तथा उनके अनुभवों को शामिल करते हुए फ़ैसलिटेटर द्वारा इनपुट दिया गया। इस समूह से निकले महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर फ़ैसलिटेटर ने बताया कि एक जिम्मेदार पिता और पति होने के नाते हमें माहवारी के दौरान अपनी पत्नी और बेटियों के लिए नैपकिन को आंगनबाड़ी केन्द्र या बाजार से उपलब्ध कराना, ये हमारी जिम्मेदारी है साथ गांव में किशोरियों की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए भी हमें पहल करनी होगी। हमें किशोरों में होने वाले बदलाव के प्रति भी जागरूक होने की जरूरत है तथा दोस्त बनकर उन्हें जागरूक करने की जरूरत है तभी हम एक जिम्मेदार पिता बन सकते हैं। परिवार नियोजन की जिम्मेदारियों पर पति और पत्नी के बीच बातचीत होनी चाहिये तथा उन दोनों को मिलकर निर्णय लेना चाहिये। परिवार नियोजन के विभिन्न तरीके हमारे सामने हैं उनके इस्तेमाल की पूरी जानकारी हमें होनी चाहिये। चूंकि आज के संदर्भ में परिवार नियोजन के लिए पुरुषों से सम्बंधित सुविधाएं ज्यादा और जटिलताएं कम हैं इसलिए पुरुषों को आगे आने और इसके लिए पहल करने की जरूरत है।

सत्र – 4 समूह प्रक्रिया को मजबूत बनाना

इस सत्र में एनीमेटर्स व समूह सदस्यों से अपील की गई कि वे अपने-अपने गांव में समूह सदस्यों के साथ नियमित रूप से बैठकें आयोजित करें तथा सभी सदस्यों की जानकारी व समझ बनाने का प्रयास करें। स्वयं भेदभाव व हिंसा न करें तथा गांव में यदि कोई व्यक्ति ऐसा करता है तो उसे समझायें। हिंसा से पीड़ित महिलाओं की मदद करें तथा जरूरत पड़ने पर पंचायत के प्रतिनिधियों की मदद लें। क्योंकि अभी भी घरों के अंदर महिलाओं के साथ हिंसा, कम उम्र में लड़कियों की शादी, उनके बाहर आने जाने पर कई तरह के प्रतिबन्ध, पढ़ाई के मौके से लड़किया वंचित हो रही हैं। महिलाओं व बच्चों के अधिकारों का हनन न हो इसके लिए सजग रहें। घर के अंदर के कामों की जिम्मेदारी केवल महिलाओं की नहीं है इसलिए पुरुषों को भी हाथ बंटाना होगा तथा महिलाओं व बच्चों का स्वास्थ्य बेहतर हो सके इसलिए उनके देखभाल में पुरुषों की बराबर भागीदारी होना चाहिये। बदलाव की इन प्रक्रियाओं में परिवार व समाज के स्तर पर अनेक प्रकार की चुनौतियां आना स्वाभाविक है इसलिए हमें बगैर किसी नकारात्मक प्रतिक्रियाओं के उन्हें समझाना है तथा बदलाव की प्रक्रिया को जारी रखना है

तभी हिंसा मुक्त व बराबरी के रिश्ते कायम हो सकते हैं। हम उम्मीद करते हैं कि आप लोग इस दो दिवसीय अधिवेशन के बाद अपने प्रयासों को और तेजी के साथ आगे बढ़ायेगें तथा दूसरे पुरुषों को इन सकारात्मक बदलाव में मदद करेंगे।



सत्र – 5 चर्चाओं का संक्षेपीकरण व धन्यवाद ज्ञापन

एनीमेटर, समूह सदस्यों व फेम सदस्यों के साथ आयोजित दो दिवसीय अधिवेशन के अंतिम सत्र में राहुल मेहता द्वारा दोनो दिन की महत्वपूर्ण बातों को संक्षेप में रखा गया। जिसके बाद सभी उपस्थित लोगों को एक साथ अभियान का बैग, टोपी, टी-शर्ट व शैक्षणिक सामग्री का वितरण किया गया। लुकमान अंसारी, जगदीश लाल व अरुण कुमार के चेतना गीतों बाद सभी साथियों को उनकी सक्रिय भागीदारी तथा वार्षिक अधिवेशन को सफल बनाने के लिए धन्यवाद देते हुए इस कार्यक्रम में सहयोग करने व भाग लेने वाली अन्य सभी संस्थाओं के प्रतिनिधियों का आभार व्यक्त करते हुए इस उम्मीद के साथ कि अगले वर्ष पुनः नई उर्जा तथा नई सफलताओं के साथ मिलेंगे, कार्यक्रम का समापन किया गया।